Paper Third

मजदूरी- किमत लोचशीलता और रोजगार

(wages-price flexibility & employment)

अर्थ

क्लासिकी अर्थशास्त्रों का विश्वास था कि अर्थव्यवस्था में सदैव - पूर्ण - रोजगार की स्थिति रहती है। बेरोजगारी होने पर, मुद्रा मजदूरी में सामान्य कटौती अर्थव्यवस्था को पूर्ण - रोजगार के स्तर पर ले आएगी। उनका तर्क इस प्रकार है :

स्वतंत्र प्रतियोगिता के अन्तर्गत आर्थिक प्रणाली की प्रवृत्ति यह रहती है कि श्रम मार्किट में अपने - आप पूर्ण रोजगार प्रदान करे। मजदूरी के ढांचे में कठोरता तथा स्वतंत्र मार्किट - अर्थव्यवस्था के कार्यकरण में हस्तक्षेप से बेरोजगारी आती है। जब ट्रेड यूनियनों को मान्यता देकर और न्यूनतम मजदूरी नियम आदि बनाकर राज्य हस्तक्षेप करता है तथा श्रम एकाधिकारात्मक रवैया अपना लेता है, तो मजदूरी बढ़ जाती है और बेरोजगारी आती है। यदि सरकार के हस्तक्षेप हटा दिए जाएँ और प्रतियोगिता की शक्तियों को स्वतंत्रता से कार्य करने दिया जाए, तो मजदूरी-दरों को घटाने - बढ़ाने से पूर्ण रोजगार हो जाएगा। जैसा कि पीगू ने लक्ष्य किया है, "पूर्णरूप से स्वतंत्र प्रतियोगिता के रहते --- सदैव एक ऐसी प्रवृत्ति प्रबलरूप से कार्यशील रहेगी जिससे मजदूरी की दरें मांग के साथ इस तरह संबंध हों कि प्रत्येक व्यक्ति रोजगार में लगा रहे।" पीगू द्वारा प्रस्तुत समीकरण $N = qY/W$ समस्त संबंध की व्याख्या कर देता है। इस समीकरण में N रोजगार में लगे श्रमिकों की संख्या है, q मजदूरी तथा वेतन के रूप में अर्जित राष्ट्रीय आय का भाग है, Y राष्ट्रीय आय है और W मजदूरी की दर है। W को घटाकर N को बढ़ाया जा सकता है। इस प्रकार, पूर्ण रोजगार की कुंजी यह है कि मुद्रा - मजदूरी घटा दी जाए।

प्रतियोगी अर्थव्यवस्था में, जब मुद्रा मजदूरी में कटौती की जाती है तो उससे उत्पादन की लागत कम हो जाती है और परिणाम-स्वरूप वस्तुओं की कीमतें गिर जाती है। जब कीमतें गिरती है तो वस्तुओं के लिए मांग बढ़ेगी और बिक्री में वृद्धि होगी। बढ़ी हुई बिक्री से अधिक श्रम को रोजगार पर लगाना आवश्यक हो जाएगा और अन्तत: पूर्ण-रोजगार प्राप्त हो जाएगा।

क्लासिकी मत इस मान्यता पर आधारित है कि मुद्रा मजदूरी सीधे और समानुपातिक तौर से वास्तविक मजदूरी से संबंधित है। इसलिए जब मुद्रा मजदूरी में कटौती की जाती है तो वास्तविक मजदूरी भी उसी अनुपात में घट जाती है। परिणामस्वरूप, बेरोजगारी कम हो जाती है और पूर्ण रोजगार पाया जाता है।

परंतु एक विशेष मजदूरी दर पर श्रम की मांग वास्तविक मजदूरी का दर का घटता हुआ फलन है। यदि W मुद्रा मजदूरी दर है, P वस्तु की कीमत, तथा MP श्रम का सीमांत उत्पाद, तो समीकरण होता है:

$$W = P \times MP \text{ या } W/P = MP$$

क्योंकि रोजगार बढ़ने से MP कम होता है। इससे निष्कर्ष निकलता है कि वास्तविक मजदूरी (W/P) के कम होने से रोजगार का स्तर बढ़ता है। नीचे की ओर ढालू श्रम का मांग वक्र D चित्र 1(A) में दर्शाया गया है। श्रम का पूर्ति वक्र वास्तविक मजदूरी दर का बढ़ता हुआ फलन माना गया है। इसे ऊपर की ओर ढालू वक्र S द्वारा चित्र में दिखाया गया है। यह वक्र बताता है कि वास्तविक मजदूरी में वृद्धि होने पर अधिक श्रमिक अपने आपके रोजगार के लिए पेश करेंगे। S और D वक्रों का E बिन्दु पर काटना पूर्ण रोजगार स्तर N_f तथा वास्तविक मजदूरी W/P दर्शाता है। यदि वास्तविक मजदूरी ऊंचे स्तर W/P_1 पर कायम की जाती है तो श्रम की अति पूर्ति d_3 होती है और N_1N_f श्रम बेरोजगार होता है। जब मजदूरी दर कम करके W/P की जाती है तो बेरोजगारी दूर हो जाती है तथा पूर्ण रोजगार स्तर N_f प्राप्त हो जाता है।

Scanned by CamScanner

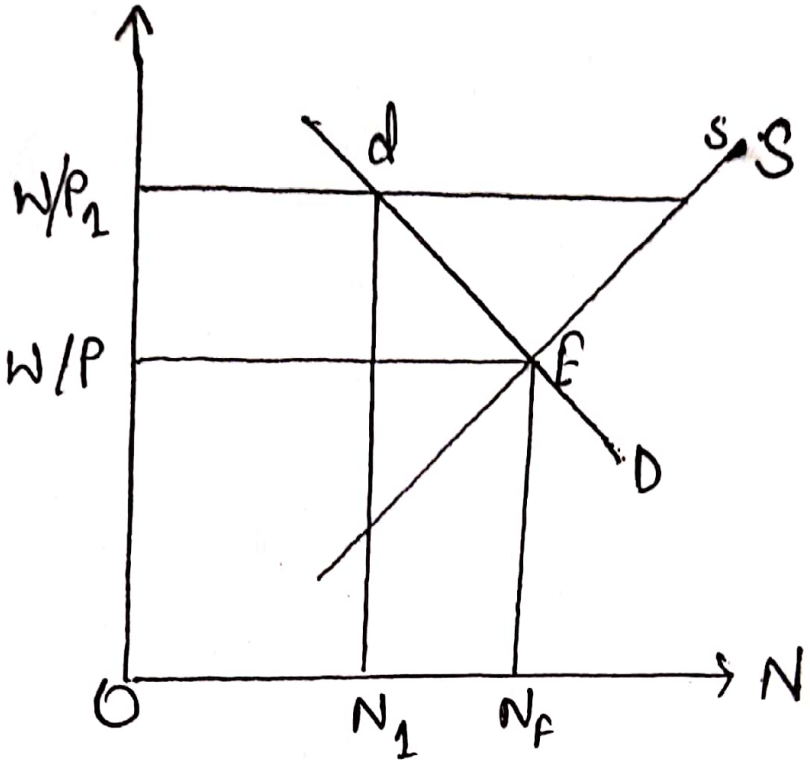

Scanned by CamScanner